हे परम प्रियतम पूर्णतम पुरुषोत्तम श्री कृष्ण ! तुम से विमुख होने के कारण अनादिकाल से हमने अनन्तानन्त दु:ख पाये, एवं पा रहे हैं । पाप करते करते अंत:करण इतना मलिन हो चुका है कि रसिकों द्वारा यह जानने पर भी कि तुम अपने भुजाओं को पसारे अपनी वात्सल्यमयी दृष्टि से हमारी प्रतीक्षा कर रहे हो, तुम्हारी शरण में नहीं आ पाता।

हे अशरण शरण ! तुम्हारी कृपा के बिना तुम्हें कोई जान भी तो नहीं सकता । ऐसी स्थिति में, हे अकारण करुण ! पतितपावन श्री कृष्ण ! तुम अपनी अहैतुकी कृपा से ही हमको अपना लो ।

हे करुणा सागर ! हम भुक्ति मुक्ति आदि कुछ नहीं माँगते, हमें तो केवल तुम्हारे निष्काम प्रेम की ही एक मात्र चाह है

हे नाथ ! अपने विरद की ओर देखकर इस अधम को निराश न करो ।

हे जीवनधन ! अब बहुत हो चुका, अब तो तुम्हारे प्रेम के बिना यह जीवन मृत्यु से भी अधिक भयानक है । अतएव,

प्रेम भिक्षां देहि, प्रेम भिक्षां देहि, प्रेम भिक्षां देहि ।
जय जय श्री राधे । जय जय श्री राधे । जय जय श्री राधे ।